Volume-08
Issue-08
August-2021

ISSN: 2349-7637 (Online)
RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
https://rhimrj.co.in/ [Peer-Reviewed Journal]

सांश्लिष्ट बिम्ब और सेनापति

डॉ. वन्दना शर्मा

विभागाध्यक्षा, हिन्दी विभाग, मुलतानीमल मोदी महाविद्यालय, मोदीनगर

हिन्दी काव्यधारा में रीतिकालीन के कविश्रेष्ठ सेनापति का अप्रतिम स्थान है। कविवर सेनापति को मिश्रबंधु समेत सभी साहित्येतिहास लेखकों ने विशेष रूप से रेखांकित करते हुए काव्य में उनके योगदान को सराहा है। कविवर सेनापति अपने विम्बों की अद्भुत एवं विविध आयामी छटा के कारण शोध छात्रों एवम् हिन्दी कविता रसिकों के लिए प्रशंसात्मक उत्सुकता मिश्रित पठनीयता का कारण रहे है। कविवर सेनापति ने मात्र 373 लिखे थे, जो कालजयी हुए। कवि के समस्त काव्य पर हिन्दी कविता मर्मज्ञ मोहि रहे हैं। सेनापति क मानवीय एवं प्राकृतिक बिम्बों की उद्भावना एवमं कल्पना चित्रण कला देखते ही बनती है। पूरे के पूरे दृश्य जैसे साकार हो उठते है। भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा एवं कसौटी पर सेनापति के विम्ब विशेष रूप से खरे उतरते हैं।

सेनापति के काव्य में अनेक प्रसंगों में बिम्ब–योजना के अन्तर्गत दृश्य व स्पर्श, दृश्य व नाद, दृश्य तथा गंध स्पर्श और नाद, स्पर्श व गंध के साथ–साथ दृश्नाद आस्वाध, स्पर्श–दृश्य आदि संश्लिष्ट अथवा मिश्रित बिम्बों के सुंदर, रमणीय, भावप्रवण तथा अनूठे उदाहरण देखने को मिलते हैं। यहाँ भी कविवर सेनापति की काव्य–प्रतिभा, वर्णन–चातुर्य, कल्पना की उड़ान और प्रस्तुतीकरण का परिचय मिलता हैः–

कविवर सेनापति ने विविध मानवीय मनोभावों, सौन्दर्य, प्राकृतिक उपादानों, रूपों, दृश्यों तथा अन्य प्रसंगों, प्रभावों और वस्तुगत सुषमा का चित्रण करते हुए उनको सजीव एवं साकार अथवा ऐन्द्रिय आनन्दाभूति का विषय प्रदान करने के लिए अनेक प्रकार के बिम्बों का संश्लिष्ट, गुम्फित या मिलाजुला प्रयोग भी किया है। उदाहरण के लिए कवि श्रृंगारिक या प्रकृति–वर्णन दृश्यों में विविध नर–नारी सौन्दर्य या षड्ऋतुवर्णन में विभिन्न दृश्यों, प्रसंगो को संजीव रूप में प्रस्तुत करता है। ऐसे दृश्यों तथा प्रसंगों को मूर्त रूप प्रदान करते हुए वह चाक्षुष, स्पृश्य, नाद्य, घ्राण तथा आस्वाद्य बिम्बों के मिश्रित बिम्बों द्वारा उन दृश्यों तथा प्रसंगों में निहित रूप, कोमलता, ध्वनि, सुगंध अथवा मिठास आदि को इन्द्रियगम्य बनाने का प्रयास करता है। इस प्रकार की बिम्ब योजना में विविध प्रकार के ऐन्द्रिय बिम्ब सहज रूप से एक–दूसरे के साथ गुम्फित होते चले गये है।

सेनापति के काव्य में अनेक प्रसंगों में बिम्ब–योजना के अन्तर्गत दृश्य व स्पर्श, दृश्य एवं नाद, दृश्य तथा गंध, स्पर्श और नाद, स्पर्श व गंध के साथ–साथ दृश्य, नाद–आस्वाद्य के अतिरिक्त स्पर्श–दृश्य व नाद आदि संश्लिष्ट या मिश्रित बिम्बां के बड़े सुन्दर, रमणीय, भावप्रवण तथा अनूठे उदाहरण देखने में आते हैं। इससे कवि की काव्य प्रतिभा, वर्णन–चातुर्य, कल्पना की उड़ान और प्रस्तुतीकरण का परिचय मिलता है।

दृश्य व स्पर्शः–

सेनापति के रूपवर्धन, श्रृंगारिक प्रसंगों तथा प्रकृति के विविध मनोरम दृश्यों को साकार रूप प्रदान करते हुए उनकी सुषमा, स्निग्धत, शीतलता, उष्णता आदि प्रभावों को विभिन्न ऐन्द्रिय बिम्बों द्वारा व्यक्त किया है। प्रियतमा के मादक आलिंगन से मस्त प्रेमीजनों का चित्रण कवि ने संश्लिष्ट या मिश्रित दृश्य व स्पर्श बिम्बों के अत्यन्त सफल उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। सुन्दरी के अधरों का रसपान करते, कंठ में भुजाओं को बाँधे प्रेमीजन चन्द्रमा से अधिक सरस प्रतिभासित हो रहे हैं। उनको परस्पर शारीरिक स्पर्श बड़ा शीतल और सुखद लग रहा है।

''अधर कौ रस गहैं कंठ लपटाइ रहें।
सेनापति रूप सुधाकर तै सरस हैं।
जेबहुत धन के हरन हमारे मन के हैं
शीतल मैं राखें सुख सीतल परस है।।[1]

प्रेयसी के अनुपम रूप और गुणों से बंधा प्रेमी प्रियतमा को अपने ह्रदय से लगाने के लिए बुरी तरह से लालायित है, किन्तु खेद है सुन्दरी के मन में ऐसी चाह उमंग के साथ नहीं उमड़ पाती। दृश्य और स्पर्श बिम्बों का बड़ा ही मनोरम मिश्रितम रूप दृश्य हैंः–

''तेरे उर लागिबे कौ लाल तरसत महा
रूप गुन बॉध्यौ तू न ताकौ उमहित है।।[2]

प्रिय के असह्य वियोग में संतप्त वियोगिनी नायिका के नेत्रों में अनवरत् अश्रुवर्षा उसके स्तनयुगल को भिगों रही है। कवि ने विरगणी नायिका का भावपूर्ण संश्लिष्ट बिम्ब अंकित किया है।

''प्यारी के नयन असुँआन बरसत् तासौं
भीजत उरोज देखि भाउ मन भाख्यौ है।।[3]

सुन्दरी की अनुपम देह इतनी सुन्दर और आकर्षक है कि समस्त श्रृंगारिक प्रसााधन उसके शरीर का स्पर्श पाकर और अधिक खिल उठते है, अर्थात् श्रृंगारिक उपकरण स्वयं सुशोभित हो जाते हैं।

इसी प्रकार तनसुख साड़ी में नायिका की छवि अत्यन्त मनमोहक प्रतीत हो रही है।

प्रिय की पाती वियोगिनी आनन्द विभोर हो जाती है। वह उसको कभी माथे से लगाती है, कभी दोनों नेत्रों से स्पर्श करती है। कभी उसको चूमती हुई वक्षस्थल से लिपटा लेती हैः–

''माथे लै चढ़ाई, दोउ दृगनि लगाई, चूमि,
छाती लपटाई राखी पाती प्रानपति की।।[5]

वर्षा–ऋतु में आकाश में उमड़ते काले–कजरारे बादलों की ठंड़ी–ठंडी सुहावनी छाया सम्पूर्ण जगत् के तन और मन को विश्राम प्रदान करती है। दृश्य और स्पर्श बिम्बों का अत्यन्त सुन्दर मिश्रित बिम्ब अवलोकनीय हैः–

''सीतल सुभग जाकी छाया जग सेनापति,
पावत अधिक तनम न बिसराम।।[6]

पूस के महीने में भयंकर शीत से त्राण पान का बड़ा ही रोचक मिश्रित बिम्ब सेनापति ने चित्रित किया हैः–

''पूस में त्रिया के ऊंचे कुच–कनकाचल मैं,
गढ़वै गरम भई, सीत सौं लरति है।।[7]

नासक महोदय अथवा कृष्ण अपनी प्रिय से भेंट करने के लिए उसके घर कोई झूठा बहाना करके पहुँच जाते हैं। दुस्साहस का परिचय देते हुए वह प्रियतमा के समीप जाकर हँसी– हँसी में बातें बनाते हुए उसका हाथ पकड़ लेते है। सम्पूर्ण प्रेम–प्रसंग दृश्य और स्पर्श बिम्बों के संश्लिष्ट बिम्ब द्वारा सजीव हो उठा है।

इसी प्रकार प्रिय के वियोग में संतप्त नायिका का राजभवन की अट्टलिका परप जड़ाऊ पलंग पर लेटी हुई होने पर भी प्रिय के साथ कुंजों की सेजों पर भोगी हुई। कामकेलि को स्मरण करके विह्वल हो उठती है। उसके कलेजे में बचे स्मृतियाँ कसकने लगती हैं।

''कंचन अटा पर जराऊ परजंक, तऊ
कुंजन की सेजें वे करेजे खरकति हैं।।[8]

कृष्ण के वियोग में छटटाती गोपिका की पीड़ा को शान्त करने के लिए उसकी सखियाँ विरहिणी के उर पर शीतल गुलाब को घिसती है, जो उसको चन्दन के लेप के समान प्रतीत होता है।

''सीतल गुलाब हूँ सौ घिसि उस पर कीनौं
लेप घन सार कौ सो मानौ घनसार को।।[9]

मनमोहिनी रूपसी के तीक्षण कटाक्ष इतने तीव्र हैं कि वे प्रेमी के ह्रदय में सदैव गहरे गढ़े रहते हैं।

प्रेमीजन के लिए उसकी प्रिय के सुखद शरीर का स्पर्श अत्यन्त आनन्द प्राप्त करता है। प्रिय को ऐसा अनुभव होता है जैसे प्रेमी के द्वारा उसके मन का संताप ूदर किया जा रहा है, ह्रदय को सांत्वना मिल रहीं है। प्रिय के शरीर का स्पर्श कदलीदल के समान कोमल, स्निग्ध और शीतल प्रतीत होता हैः–

''तपति बुझाइबे कौं हिय सियराइबे कौं
रंभा तैं सरस तेरे मन कौं परस हैं।।[10]

कविवर सेनापति ने शीतकाल में ठंड को दूर करने के लिए दम्पति द्वारा एक दूसरे को प्रगाढ़ आलिंगन में बाँध लेने के दृश्यों का भी बड़ा ही रोचक संश्लिष्ट बिम्ब उपस्थित किया है। पूरा दृश्य जैसे नेत्रों के सम्मुख सजीव हो उठता है।

दृश्य व नाद

कविवर सेनापति ने संश्लिष्ट बिम्बों के अन्तर्गत दृश्य एवं नाद बिम्बों के मिश्रित बिम्बों का भी बड़ा सुन्दर, आकर्षक और ह्रदयग्राही प्रयोग प्रयोग किया है। कतिपय उदाहरण उल्लेखनीय है। सुन्दरी अपने पैरों में बंधे नुपूर की मधुर झंकार के साथ जब धीरे–धीरे चलती हुई आंगन में पदार्पण करती है तो उसकी शोभा संध्याकालीन छवि सी लग रही थी। दृश्य और नादबिम्बों का मिश्रित बिम्ब देखते ही बनता है।

''नूपुर कौ भनकाइ मद ही धरति पाइ,
ठाडी आइ आंगन भई ही सांभी बार सी।।[11]

ऋतुराज बसन्त के आगमन पर सम्पूर्ण प्रकृति उसका आनन्द विभोर होकर स्वागत करती है। इस दृश्य का कविवर सेनापति ने बड़ा ही मनोरम चित्रण दृश्य एवं नाद बिम्बों के मिश्रित बिम्ब के माध्यम से किया है। बसंत के अभिनन्दन में भौरों के झुण्ड सुहावने ढ़ंग से गुनगुनाने लगते है। जिससे सुन्दर कुंज गूंजने लगते हैं। ऋतुराज के पधारने से प्रफुल्लित कोयल समूह कूक–कूक कर सबका ह्रदय आनन्दित करने लगता है।

''मधुकर पुंज पुनि मंजुल करत गुंज,
सुधरत कुंज सम सदन समाज के।।[12]

इसी प्रकार वर्षा–ऋतु के ह्रदयग्राही, रमणीय और सुन्दर चित्र संजोते हुए कवि ने अनेक मनमोहक दृश्य एवं नाद बिम्बों के मिश्रित बिम्बों को कल्पित किया हैं ग्रीष्म ऋतु की असह्य गर्मी को दूर करने के लिए नभमण्डल में नये–नये बादल दम्पति को सुख प्रदान करते है। मेघों की गर्जना सुनकर चारों ओर मोरों के झुण्ड कूकने लगते है। रात्रि के शान्त वातावरण को मंढ़कों की तीव्र टर्राहट भंग करने लगती है।

''सुनि घनघोर मोर कूकि उठे चहुँ ओर,
दादुर करत सोर जामिनीन कौ।।[12]

वर्षा–ऋतु में आकाश में गरजते बादलों, पीपहे और अन्य पक्षियों की ध्वनि सुनकर विरह में छटपटाती प्रिया का तन–मन काँपने लगता है। उसके नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती है। चातक और पक्षियों का कलरव अंग–अंग को पीड़ित करने लगता है। सम्पूर्ण दृश्य, दृश्य और नाद बिम्बों के मिश्रित बिम्ब का अनुपम उदाहरण है।

वर्षा में बिजली की कौंध, इन्द्रधनुष की चमक और काले–काले बादलों की घनघोर गडगडाहट कोयल, जुगनुओं का यहाँ–वहाँ कूंजन तथा ठंडी फुहरों के साथ वायु के तीव्र थपेडे मनभावन की अनुपस्थिति में प्रयसी को विरहज्वर में बहुत अधिक तरसाने लगते है। दृश्य और नादबिम्बों का संश्लिष्ट बिम्ब निश्चय ही अत्यन्त भावपूर्ण तथा मार्मिक है।

गंभीर मेघो की गर्जना सुनकर सुहागिन की क्षोभ भरी छाती बुरी तरह से धड़कने लगती है।

''धीर जलधर की सुनत धुनि धरकी है
दरकी सुहागिल की छोड भरी छतियाँ।।[13]

कविवर सेनापति का मन वर्षा ऋतु के मनमोहक दृश्यों को अंकित करने में संशिलष्ट बिम्बों को जुटाने में बहुत अधिक रमा है। वह अनेक छन्दों में मेघों के बरसने, गर्जना करने आकाश में बिजली के काँधने तथा उससे आह्लादित कोयल, मोर पपीहे और पक्षीगणों के शोर मचाने का अत्यन्त सुन्दर दृश्य एवं नाद बिम्बों के संश्लिष्ट बिम्ब संजोने में सफल हुए हैः–

''गंग गग गाजत गगन घन क्वार के।।[14]

सीता स्वयंवर के समय राम द्वारा भगवान शंकर के पिनाक धनु की प्रत्यंचा चढ़ाते ही उत्पन्न हुई भंयकर ध्वनि से त्रिलोक के चलायमान हो जाने के दृश्य का मिश्रित बिम्ब निश्चय ही अत्यन्त सजीव और साकार हो उठा है।

राम द्वारा सागर के अभिमान को नष्ट करने पर समस्त देवगण भिन्न–भिन्न प्रकार के वेदमंत्रों का पाठ करते हुए संगीत की धुन पर गीत गाते, नादर और सरस्वती वीणा के स्वरों पर मधुर स्तुतिगान करने लगें। दृश्य और नाद बिम्ब के अनेक सुन्दर मिश्रित बिम्ब दृष्टव्य है।

इसी प्रकार रावण वध के उपरान्त प्रसन्न होकर देवताओं द्वारा भगवान राम के जयघोष से दसों दिशायें गुँजायमान हो गई। भगवान शंकर की नादध्वनि और दिग्गजों की गंभीर गर्जना, इन्द्र की सभा के नगाड़ों ने सम्पूर्ण भुवन के भय को नष्ट कर दिया।

वास्तव में कविवर सेनापति विधि प्रसंगों में प्राकृतिक दृश्यों तथा अन्य दृश्यों को साकार तथा ऐन्द्रिय रूप प्रदान करते हुए दृश्य एवं नाद बिम्बों के मिश्रित बिम्ब प्रस्तुत करने में सफल हुए है। विशेष रूप से वर्षाकाल और पौरणिक दृश्यों में सजीवता लाने में संश्लिष्ट बिम्बों का योगदान उल्लेखनीय है।

सन्दर्भ सूची

1. कवित्त रत्नाकर 1 – 62
2. वही 2 – 64
3. वही 2 – 23
4. वही 2 – 60
5. कवित्त रत्नाकर 3 – 39
6. वही 3 – 44
7. वही 2 – 42
8. कवित्त रत्नाकर 2 – 43
9. वही 1 – 21
10. वही 2 – 24
11. वही 3 – 2
12. वही 3 – 21
13. वही 3 – 28
14. वही 3 – 38
15. ऋतुवर्णन परम्परा और सेनापति का काव्य
16. हिन्दी सात्यि का इतिहास